



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M-2299 विषय धर्मशास्त्र

नाव त्रिकालसंध्या

लेखक / लिपीकार _____

पृष्ठ 04 काळ _____ पूर्ण / अपूर्ण

संध्या

M-2299

डॉ. हर्षदा हवे तर्फे 5/9/2013

मथ श्री काल संध्या लिख्यते भस्मधारण मंत्र ॐ

अ नि रीति भस्म वायु रीती भस्म मल मोती भस्म स्थ

लामांति भस्म व्यो मोती भस्म सर्व इवा इदं भस्म मन

एता बो चक्षुः श्री भस्मानो वि॥ ॐ त्रं व कं य प्रा म इ सु

गं न्धि म पु व्ती व द्धि न म उ वी र्क मि व व न्ध ना न्मृत्यो

मु क्षी य मा मृतो न्त्र ॥ ॐ त्या यु र्वं म म द मे ० पु व म

ॐ भूः ॐ भूवः ॐ स्वः इती त्री आ च मनं ॥ अथ क प

स्य श्री ॐ वां छ आ स्थे स्तु ॥ न सो मे प्रा णो स्तु ॥ अ क्षो

मे च क्षु र स्तु ॥ क र्णो यो मे श्रो त्र म स्तु वा ह्यो मे व क म स्तु

॥ १ ॥

संध्या

॥२॥

कुर्वो मे ओजोस्तु ॥ ३ ॥ गान्धारी मे रुगा नीतनुस्तन्या मे स रु
सन्तु ॥ गायत्रीमंत्रयडेकरीशीषाबंधनकरवुं ॥ संकल्प
अत्राद्य० वासरे उपातदुरीतक्षयार्थं ब्रह्मावाधै प्रातः सध्या
पासनमहंकरीष्ये अथ प्राणायाम्य ऊं भूः ऊं भूवः ऊं स्वः
ऊं महः ऊं भनः ऊं तपः ऊं सत्यं ऊं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ऊं सा पोत्रो वीर
सो मृतं ब्रह्म भू भूवः स्वः रोम ॥ ४ ॥ सुसूर्यभ्य मा मनु
भ्य मनुपतयश्च मनुकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां ॥ यद्रात्या

पापमकाशीमनसावाचा इस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शीञ्जारा
त्रिस्तदवकुम्पनुयत्कां चिददुरीतमयि दृढमहं मा मृतयो नै
सूर्येभ्यो तीक्ष्णो मीस्वहा मात्रेन कंभापो हीभ्यो मयो भूव ॥ स्वा
ने कर्मेदधातन ॥ महे रणा यवक्षिणे ॥ योवः शीवत मोरस ॥ स्तस्य
भात्रयते इन्ः कुशतिरीवमातरः ॥ तस्मात्तरुमा मयो य
शक्षयाय जीव्यध ॥ मापो जनयथाचन ॥ अधममृण
कं कृतं च सत्यं चाभीष्टा तपसो ह्यजायध तत तोराच्य
जायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादण्विवादधिसंवत्

सध्या

३

स रौअना यत अहो रात्रा णी वी दध द्धी स स्थ मा स तो वशी स्तु
र्वा चन्द्र मसौ धाता यथा पूर्वमि क ल्य य व दि वं च पृथी वा
चान्तरीक्ष मथो स्वहः सूर्यो पस्थान रुदु त्यं जात वेदशंदे
वं व हुंति केतवः दशो विभ्रा य सूर्यम ॥ धी नंदे वा ना
मुदगा दनी कं चहुं मी न स्थ वरु ण स्था ग्रेः आ प्रा द्यो वा
धृथी वा अं न्त री क्षं सूर्य आत्मा जग तस्ति स्थु च छे ॥
अत्राद्य ० म माशेश या पक्ष यार्थं गायत्री ज प म हुं करा व्हे
अ ने न ज प कृ ते न स वि ता दे वः प्री पं ता म् इ ती प्रा तः

संध्या सपूर्णा अत्राः मध्याह्न संध्या पासन महुंकराव्ये सूर्यश्च
नेवदले ॐ आपः पुनन्तु पृथ्वी पृथ्वी पुता पुना तु मां
पुनन्तु वसुधा सतीव्री सु पुता पुना तु मां यदुच्छिष्टमभो
स्य च यद्वा दृच्छंतीतं मयी सर्वं पुनन्तु मा मा पो स ताश्च प्र
तीग्रहं स्वेहः इती मध्याह्न संध्या अत्राः सायं संध्या पासन
महुंकराव्ये सूर्यश्च नेवदले ॐ अग्नीश्च मा मन्त्रश्च मन्त्र
वत यश्च मन्त्र कृते भ्यः पाये भ्यो रक्षन्तां यदन्तः
या य म काशी मनसा वाचा ० रद भ्या म् ० रा प्रीयत
को च दूरीतं मई ई द महुं मा ० सत्यो ज्योती न्म ०
१२॥ अस्तु ॥



[OrderDescription]
,CREATED=22.01.20 12:24
,TRANSFERRED=2020/01/22 at 12:26:35
,PAGES=7
,TYPE=STD
,NAME=S0002606
,Book Name=M-2299-TRIKALSANDHAYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF

FILE7=00000007.TIF

,